Hanuman Chalisa Marathi श्री हनुमान चालीसा मराठी

॥ दोहा ॥

श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुरु सुधारि ।

बरनउँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि ॥

बुद्धिहीन तनु जानिके सुमिरौं पवन-कुमार ।

बल बुधि बिद्या देहु मोहिं हरहु कलेस बिकार ॥

॥ चौपाई ॥

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर । जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ॥०१॥

राम दूत अतुलित बल धामा । अंजनी-पुत्र पवनसुत नामा ॥०२॥

महाबीर बिक्रम बजरंगी । कुमति निवार सुमति के संगी ॥०३॥

कंचन बरन बिराज सुबेसा । कानन कुण्डल कुंचित केसा ॥०४॥

हाथ बज्र और ध्वजा बिराजै । काँधे मूँज जनेऊ साजै ॥०५॥

संकर सुवन केसरी नंदन । तेज प्रताप महा जग बन्दन ॥०६॥

बिद्यावान गुनी अति चातुर । राम काज करिबे को आतुर ॥०७॥

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया । राम लखन सीता मन बसिया ॥०८॥

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा । बिकट रूप धरि लंक जरावा ॥०९॥

भीम रूप धरि असुर सँहारे । रामचन्द्र के काज सँवारे ॥१०॥

लाय संजीवन लखन जियाये । श्रीरघुबीर हरषि उर लाये ॥११॥

रघुपति किन्ही बहुत बड़ाई । तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ॥१२॥

सहस बदन तुम्हरो जस गावैं । अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ॥१३॥

सनकादिक ब्रम्हादि मुनीसा । नारद सारद सहित अहीसा ॥१४॥

जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते । कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते ॥१५॥

तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा । राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥१६॥

तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना । लंकेस्वर भए सब जग जाना ॥१७॥

जुग सहस्त्र जोजन पर भानु । लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥१८॥

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं । जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं ॥१९॥

दुर्गम काज जगत के जेते । सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥२०॥

राम दुआरे तुम रखवारे । होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥२१॥

सब सुख लहै तुम्हारी सरना । तुम रच्छक काहू को डर ना ॥२२॥

आपन तेज सम्हारो आपै । तीनों लोक हाँक तें काँपै ॥२३॥

भूत पिसाच निकट नहिं आवै । महाबीर जब नाम सुनावै ॥२४॥

नासै रोग हरै सब पीरा । जपत निरन्तर हनुमत बीरा ॥२५॥

संकट तें हनुमान छुडावे । मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ॥२६॥

सब पर राम तपस्वी राजा । तिन के काज सकल तुम साजा ॥२७॥

और मनोरथ जो कोई लावै । सोहि अमित जीवन फल पावै ॥२८॥

चारो जुग परताप तुम्हारा । है परसिद्ध जगत उजियारा ॥२९॥

साधु सन्त के तुम रखवारे । असुर निकन्दन राम दुलारे ॥३०॥

अष्टसिद्धि नौ निधि के दाता । अस बर दीन जानकी माता ॥३१॥

राम रसायन तुम्हरे पासा । सदा रहो रघुपति के दासा ॥३२॥

तुम्हरे भजन राम को पावै । जनम जनम के दुख बिसरावै ॥३३॥

अन्त काल रघुबर पुर जाई । जहाँ जन्म हरिभक्त कहाई ॥३४॥

और देवता चित्त न धरई । हनुमत सेही सर्ब सुख करई ॥३५॥

संकट कटै मिटै सब पीरा । जो सुमिरे हनुमत बलबीरा ॥३६॥

जय जय जय हनुमान गोसाईं । कृपा करहु गुरुदेव की नाईं ॥३७॥

जो सत बार पाठ कर कोई । छूटहि बन्दि महा सुख होई ॥३८॥

जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा । होय सिद्धि साखी गौरीसा ॥३९॥

तुलसीदास सदा हरि चेरा । कीजै नाथ हृदय मह डेरा ॥४०॥

॥ दोहा ॥

पवनतनय संकट हरन मंगल मुर्ति रूप ।
राम लखन सीता सहित हृदय बसहु सुर भूप ॥

परमSoul
Paramsoul.com